क्या उत्तर-पूर्व भारतीय SARS-CoV-2 संक्रमण फैला रहे हैं?

कोविड-19, SARS-CoV-2 वायरस द्वारा उत्पन्न एक ज़ुओनॉटिक रोग है, यानी यह बीमारी पशुओं से मनुष्यों में आई है। अध्ययनों से यह संकेत मिले हैं कि मनुष्यों में इस बीमारी का स्पिलओवर देश के बाहर घटित हुआ है और भारत के किसी भी ख़ास तबक़े या जातीय समूह का इसके प्रसार से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए, इस बात के कोई प्रमाण नहीं हैं कि किसी एक ख़ास इलाक़े के या किसी ख़ास जातीयता वाले लोगों द्वारा बाक़ियों की तुलना में इस वायरस को फैलाने की सम्भावनाएँ ज़्यादा हैं।

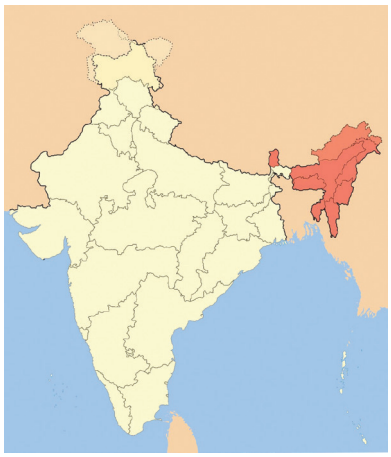

Credits: Chaipau, Wikimedia Commons. URL: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:India-locator-map-NE.svg. License: CC-BY-SA.

इस महामारी को लेकर ऐसी अप्रमाणिक और निराधार अफवाहों का उड़ना कोई नई बात नहीं है। पहले भी इतिहासकारों ने यूरोप में प्लेग महामारी (काली मौत) के दौरान यहूदियों, इबोला महामारी के समय अफ्रीकियों, और सार्स-कोवि महामारी के दौरान हॉन्गकॉन्ग में चीनी लोगों से जुड़ी आशंकाओं और असुरक्षाओं की ख़बर दी है। इनमें से हरेक मामले में, बीमारी के प्रसार के साथ जुड़ाव की आशंकाओं के कारण कुछ लोगों के साथ भेदभाव किया गया और उन्हें बदनाम किया गया। ऐसी प्रतिक्रियाएँ प्रताड़ित किए जाने वाले लोगों के लिए हानिकारक भी होती हैं और अन्यायपूर्ण भी। ऐसी अफवाहें सामाजिक अशान्ति फैलाती हैं और हमें जातीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय सरहदों में बाँटती हैं।

SARS-CoV-2 वायरस से संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आने पर कोई भी व्यक्ति संक्रमित हो सकता है फिर उसकी सांस्कृतिक पहचान, जाति, धर्म या राष्ट्रीयता चाहे जो हो। कोई भी संक्रमित व्यक्ति दूसरों को संक्रमित कर सकता है अगर वह मास्क नहीं लगाता हो या क्वारंटीन आचरण का पालन नहीं करता हो, और अन्य सावधानियाँ नहीं बरतता हो।

इस सम्बन्ध में हम यहाँ भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का यह हवाला देते हैं, "संचारी रोगों के प्रकोप के दौरान उत्पन्न हुईं जन स्वास्थ्य सम्बन्धी आपात स्थितियों के कारण डर और बेचैनी का माहौल बनता है जिसके चलते लोगों और समुदायों के ख़िलाफ़ पूर्वाग्रह पनपते हैं और उन्हें बदनाम कर उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाता है। ऐसे आचरण का अन्त बढ़ती दुश्मनी, अराजकता और अनावश्यक सामाजिक व्यवधानों के रूप में हो सकता है। ऐसे पूर्वाग्रहों को ख़त्म करना और एक ऐसे समाज के रूप में उभरना निहायत ज़रूरी है ताकि एक ऐसा समाज खड़ा हो जो स्वास्थ्य साक्षर हो, और इस आपदा का सामना करने में उचित प्रतिक्रियाएँ दे सके।"

साथ-साथ होने से मानवता बची रहती है, बँटने पर उसका पतन होता है!

Notes:

1. This response was first published on the Indian Scientists' Response to CoViD-19 (ISRC) website.
2. Source of the image used in the background of the article title: https://pixabay.com/photos/coronavirus-corona-virus-covid-19-4958989/. Credits: thiagolazarino, Pixabay. License: CC-0.

आईएसआरसी (इंडियन साइंटिस्ट रिस्पॉन्स टू कोविड-19) 500 से ज़्यादा भारतीय वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, टेक्नोलॉजिस्टों, डॉक्टरों, जन स्वास्थ्य शोधकर्ताओं, विज्ञान सम्प्रेषकों, पत्रकारों और विद्यार्थियों का एक समूह है। यह लोग *कोविड-19* महामारी का सामना करने के लिए स्वेच्छा से एकजुट हुए हैं। समूह से indscicov@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** मनोहर नोतानी